राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता

डॉ. मीरारानी बल

वाणी प्रकाशन का लोगो
विख्यात चित्रकार मकबूल फिदा हुसेन
की कूची से

इस पुस्तक के प्रकाशन में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है और इसमें कथित तथ्य, प्रकट किए गए मन्तव्य और निष्कर्ष, जिन तक लेखक पहुँचा है, पूर्णतः लेखक के हैं और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

ISBN : 978-93-5229-264-6

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

संस्करण : 1994
संस्करण : 2005

© डॉ. मीरा रानी बल

स्वास्तिक ऑफसेट, दिल्ली-110032
द्वारा मुद्रित

मूल्य : 300.00

RASTRIYA NAVJAGRAN AUR
HINDI PATRAKARITA
by Dr. Meera Rani Bal

आमुख

प्रस्तुत ग्रंथ डॉ० (श्रीमती) मीरा रानी बल के गहन अध्ययन, चिन्तन और सार-ग्राहिणी दृष्टि का परिचायक है। इसकी परिकल्पना पी-एच०डी० (हिन्दी) के शोध प्रबन्ध रूप में की गई किन्तु जिस प्रकार के शोधप्रबन्ध सामान्यतः लिखे जाते हैं, यह उनसे कुछ भिन्न है क्योंकि इसे मीरा जी के अथक परिश्रम और प्रतिभा का अवदान समान रूप से प्राप्त हुआ है। शोधप्रबन्ध के रूप में, इस ग्रंथ की संरचना मेरे निर्देशन में हुई। अतः मैं अधिकारपूर्वक कह सकता हूँ कि इसमें प्रतिपाद्य विषय की अवधारणा उसके समस्त आयामों में हुई है और राष्ट्रीय नवजागरण तथा हिन्दी पत्रकारिता के अन्तस्सम्बन्ध को विधिवत निरूपित किया गया है।

सन् अट्ठारह सौ सत्तावन ईस्वी के प्रथम स्वाधीनता समर के उपरान्त अंग्रेजी हुकूमत का ऐसा दमन-चक्र चला कि समूची जाति पीड़ा और निराशा के गर्त में डूब गई। फिर, धीरे-धीरे आशा की नयी किरण फूटी और राष्ट्रीय नवजागरण की लहर जन-मानस में नूतन शक्ति का संचार करने लगी। इसमें हिन्दी पत्रकारिता का विलक्षण योगदान रहा है। जहाँ एक ओर नवजागरण की चेतना ने हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप-निर्माण किया, वहीं दूसरी ओर हिन्दी पत्रकारिता ने सामाजिक-धार्मिक सुधारों का पथ प्रशस्त करते हुए, स्वाधीनता के आलाप को नये सिरे से मुखर किया। प्रस्तुत ग्रंथ में उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्द्ध की इसी बहुआयामी पत्रकारिता का सर्वांगीण निरूपण किया गया है।

नवजागरण किसे कहते हैं? भारतीय नवजागरण किन परिस्थितियों और किन रूपों में मूर्तिमान हुआ? पत्रकारिता का स्वरूप क्या है? इसका विकास किन प्रणालियों में हुआ? धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में इसके कौन-कौन से आयाम विकसित हुए? भारतीय जन-मानस की स्वातन्त्र्य चेतना के विस्फोट में इसका क्या योगदान रहा है और राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना ने हिन्दी पत्रकारिता को कैसी गति एवं कौन-सी दिशाएँ प्रदान कीं? डॉ० (श्रीमती) मीरा रानी बल ने इस प्रकार के कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों से इस ग्रन्थ में सीधा साक्षात्कार किया है। उनके विस्तृत अध्ययन, चिन्तन और ठोस लेखन के कारण यह ग्रंथ राष्ट्रीय नवजागरण तथा हिन्दी पत्रकारिता का सटीक अनुशीलन प्रस्तुत करता है। आशा है कि यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी सिद्ध होगा और हिन्दी जगत् में इसका यथेष्ट स्वागत होगा।

—डॉ० रवीन्द्र 'भ्रमर' डी०लिट०
प्रख्यात कवि, और समीक्षक
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय